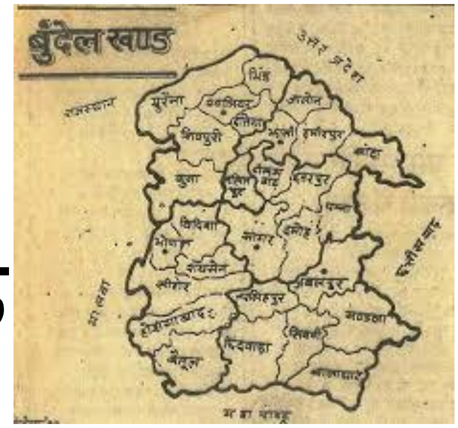
अरविन्द कुमार त्रिपाठी
द्वारा
पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड
का संक्षिप्त वर्णन



Puratan BANDA, Bundelkhand ka Sankshipt Varnan

Arvind Kumar Tripathi

ISBN : 978-93-5906-820-6



एतिहासिक संरचना गोसाइ हिम्मतबहादुर आदि
Etihasik Sanrachana Gosai Himmat Bahadur etc

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

एतिहासिक संरचना गोसाइ हिम्मतबहादुर आदि Etihasik Sanrachana Gosai Himmat Bahadur etc

अध्याय शीर्षक	ऐतिहासिक सन्रचना गोसाइ हिम्मतबहादुर आदि
सर्वाधिकार	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
आइ एस बी एन/ **ISBN**	**978-93-5906-820-6**
प्रकाशक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक ग्राम – अछरौन्ड, बान्दा – 210 001 उत्तर प्रदेश
मूल्य	निःशुल्क, पुस्तक मित्र को देना
सन्स्करण	प्रथम, 01 अप्रैल 2020
आवरण/मुखपृष्ठ	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
शब्द – संयोजन	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
मुद्रक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
सन्दर्भ/साभार/सौजन्य	अध्याय **Reference** देखे

Chapter Heading	**Etihasik Sanrachana Gosai Himmat Bahadur etc**
Copyright @	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
ISBN	**978-93-5906-820-6**
Publisher	**Arvind Kumar Tripathi** **Village - Achharaund** **Banda - 210 001** **Uttar Pradesh**
Price	**Free, Circulate to Friends**
Edition	**First, 01 April 2020**
Cover Main	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Word Compositor	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Printer	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Reference/ Gratitude/ courtesy	**Peruse Chapter - REFERENCE**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

एतिहासिक संरचना गोसाइ हिम्मतबहादुर आदि Etihasik Sanrachana Gosai Himmat Bahadur etc

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

एतिहासिक संरचना गोसाइ हिम्मतबहादुर आदि Etihasik Sanrachana Gosai Himmat Bahadur etc

पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड – बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास
एतिहासिक संरचना गोसाइ हिम्मतबहादुर आदि
Etihasik Sanrachana Gosai Himmat Bahadur etc

एतिहासिक संरचना गोसाइ हिम्मतबहादुर आदि Etihasik Sanrachana Gosai Himmat Bahadur etc

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास

बान्दा में – गोसाई लोगों के आक्रमण–

बुन्देलखण्ड में मराठों की व्यवस्था कुछ ठीक थी परन्तु यहां भी एक नया राज्य स्थापित हो रहा था। झान्सी के समीप ही गोसाई लोगों ने बहुत सी सेना एकत्र की थी और वह मराठों को हराकर एक स्वतन्त्र राज्य स्थापित करना चाहते थे। गोसाई लोगों का पहला राजा इन्द्र गिरी था। इसने अपनी सेना लेकर सम्वत् 1802 में मोठ परगने पर अपना अधिकार कर लिया। यहां पर गोसाई लोगों ने एक किला भी बनवाया अपनी सेना बढ़ाकर वे लोग आसपास के देश अपने अधिकार में करने लगे। थोड़े दिनों में उन लोगों ने 114 गांव अपने अधिकार में कर लिए। उस समय झान्सी में मराठों की ओर से नारोशन्कर नाम का एक सरदार नियत था। नारोशन्कर ने गोसाई लोगों को दबाने का प्रयत्न किया। सम्वत् 1807 में उन्होंने गोसाई लोगों को एक युद्ध में हरा दिया। इन्द्र गिरी को हार कर मोठ से भाग जाना पड़ा। मोठ से भागने पर इन्द्र गिरी इलाहाबाद गया और इलाहाबाद में वह अवध के वजीर षुजाउद्दौला के पास आया। इन्द्र गिरी बहुत शूरवीर पुरुश था। अवध के नवाब वजीर षुजाउद्दौला ने इन्द्र गिरी से प्रसन्न होकर उसे अपने यहां नौकर रख लिया। षुजाउद्दौला इन्द्र गिरी का बहुत सम्मान करता था और वह अवध के मुख्य सैनिक सरदारों में से था। इन्द्र गिरी के मृत्यु सम्वत् 1809 में हुई और उसके पश्चात उनका चेला अनूप गिरी उर्फ हिम्मत बहादुर अवध में सेना का सरदार हो गया।

एक जैतपुर के राजा पहाड़ सिन्ह ने अपने वन्शजों का भावी झगड़ा मिटाने के लिए अपने राज्य के तीन भाग कर दिए जिसमें एक भाग गुमान सिन्ह को, दूसरा भाग खुमान सिन्ह को और तीसरा भाग गज सिन्ह को दिया गया। इस प्रबन्ध के अनुसार गुमान सिन्ह का राज्य बान्दा और अजयगढ़ में, खुमान सिन्ह का चरखारी में और गज सिन्ह का जैतपुर में हुआ। उनके समकालीन पन्ना के राजा हिन्दूपत थे।

अवध के नवाब षुजाउद्दौला के यहां अपने गुरु के मरने पर अनूप गिरी सैनिक सरदार हो गया। अनूप गिरी बड़ा वीर सैनिक था, इसलिए नवाब ने इस हिम्मत बहादुर की उपाधि दी। 1000 सवार इसके अधिकार में रहते थे। जब बक्सर में, सम्वत् 1820 में कम्पनी की सरकार और अवध के नवाब के बीच में युद्ध हुआ तब हिम्मत बहादुर उर्फ अनूप गिरी ने बड़ी वीरता दिखाई थी। एक घाव अपनी जान्घ में खाकर हिम्मत बहादुर ने षुजाउद्दौला की जान बचाई थी। जब नवाब हारकर भागा तब भी हिम्मत बहादुर ने नवाब को बड़ी सहायता दी थी। इस पर नवाब ने प्रसन्न होकर हिम्मत बहादुर को सिकन्दरा और बिन्दकी के परगने दिए थे।

बुन्देलखण्ड पर आक्रमण करने का विचार हिम्मत बहादुर को पहले से ही था षुजाउद्दौला ने हिम्मत बहादुर को इस काम में पूरी सहायता दी और अपने सरदार करामत खां को हिम्मत बहादुर के साथ कर दिया। इस सेना को साथ लेकर हिम्मत बहादुर ने बान्दा पर आक्रमण किया। बान्दा में इस समय गुमान सिन्ह के यहां नोंने अर्जुन सिन्ह नाम का एक बड़ा वीर सैनिक था। अपनी सेना तैयार करके नोंने अर्जुन सिन्ह ने तिन्दवारी नामक गांव के समीप हिम्मत बहादुर से युद्ध किया। हिम्मत बहादुर को अच्छी तरह हरा के उसकी सेना को भगा दिया और फिर उसकी भागती हुई सेना का पीछा भी किया। हिम्मत बहादुर तथा करामत खां को यमुना तैरकर अपनी जान बचानी पड़ी। इस युद्ध में राजा गुमान सिन्ह को हिन्दूपत ने भी सहायता दी थी।

हिम्मत बहादुर की हार के पश्चात, बुन्देले फिर अपने आपसी कलह में लग गए। जिन कलहों से इनका सर्वनाश हो रहा था, उन्हें मिटाने के लिए इन्होंने कभी प्रयत्न नहीं किया। चरखारी के राजा खुमान सिन्ह और उनके भाई गुमान सिन्ह में भी विक्रम सम्वत् 1839 में युद्ध हो गया। नोंने अर्जुन सिन्ह की सहायता से खुमान सिन्ह को मार डाला गया और गुमान सिन्ह की जीत रही।

हिम्मत बहादुर ने फिर नवाब से सहायता लेकर बुन्देलखण्ड पर आक्रमण किया। बुन्देलखण्ड में पहले हिम्मत बहादुर ने दतिया पर चढ़ाई की। दतिया के राजा रामचन्द्र को हराकर हिम्मत बहादुर ने चौथ वसूल की और फिर मोठ,

गुरसराय आदि परगनों पर अपना अधिकार कर लिया। यह परगने मराठों के अधिकार में थे। मराठों ने यह देखते ही पूना दरबार से सहायता मांगी। पूना दरबार में भी इस समय बड़े–बड़े झगड़े हो रहे थे। पेशवा बनने के लिए राघोबा नामक एक सरदार ने अपने भतीजे नारायण राव को विक्रम सम्वत् 1829 में मरवा डाला था। मराठे सरदार राघोबा से असन्तुष्ट थे और वह चाहते थे कि राघोबा पेशवा ना बन सके। नाना फड़नवीस नाम का एक सरदार राघोबा के बहुत विरुद्ध था जब बुन्देलखण्ड से सहायता मांगी गई, तब नाना फडणवीस ने सहायता भेजी। नाना फडणवीस बुन्देलखण्ड के सूबेदार बालाजी गोविन्द से प्रसन्न थे। बालाजी गोविन्द भी राघोबा के विरोध में थे, इसलिए बालाजी गोविन्द और नाना फडणवीस में मित्रता थी। नाना फडनवीस के हुकुम के अनुसार सेन्धिया और होल्कर ने भी बालाजी गोविन्द की सहायता की। यह सेना साथ ले बालाजी गोविन्द ने हिम्मत बहादुर का सामना किया।

हिम्मत बहादुर की ओर से गुरसराय के किले पर सिन्गार गिरी और प्राण सिन्ह नाम के दो सरदार नियत थे। उनके पास सेना भी बहुत थी। इनसे लड़ने के लिए मराठों की ओर से दिनकर राव अन्ना तैयार हुए। दिनकर राव अन्ना ने गोसाई लोगों से युद्ध करना बड़ा कठिन कार्य समझा। बालाजी गोविन्द से और भी सहायता मांगी और झान्सी के सूबेदार रघुनाथ राव हरि नेवलकर दिनकर राव अन्ना की सहायता के लिए भेजे गए। इन दोनों ने गोसाई लोगों को हरा दिया और उन्होंने हार कर किला छोड़कर चला जाना पड़ा। बालाजी गोविन्द ने दिनकर राव से प्रसन्न होकर गुरसराय का सारा प्रबन्ध उनके अधिकार में कर दिया।

मराठों के पास होलकर और सिन्धिया की सहायता भी पहुन्ची। इस सेना को लेकर रघुनाथ राव हरि नेवलकर ने फिर गोसाई लोगों पर आक्रमण किया। इस समय अवध के नवाब और हिम्मत बहादुर में अनबन हो गई थी। जब नवाब ने देखा कि हिम्मत बहादुर अवध के राज्य की परवाह न करके अपना स्वतन्त्र राज्य जमाने के प्रयत्न में लगा है तब वह बहुत क्रोधित हुआ और उसने हिम्मत बहादुर के भाई उमराव गिरी को कैद कर लिया। मराठो को यह झगड़ा मालूम हो गया और उन्होंने इसी समय में हिम्मत बहादुर को हरा देने का अच्छा अवसर सोचा।

कालपी के निकट गोसाईयों और मराठों में गहरी लड़ाई हुई। अनूपगिरी उर्फ हिम्मत बहादुर हार गया और वह अवध की ओर भाग जैसा कि होता है कि हारे हुए सेना के सिपाही दूसरी सेना में भर्ती हो जाते हैं तो हिम्मत बहादुर के सब सैनिक सिन्धिया की सेना में भर्ती हो गए। पीछे से अनूपगिरी भी सिन्धिया की सेना में भर्ती हो गया। मराठों ने गोसाई लोगों को सम्वत् 1832 के लगभग हराया।

अली बहादुर सम्वत् 1846 में बुन्देलखण्ड पहुन्चा। अली बहादुर ने पहले हिम्मत बहादुर उर्फ अनूप गिरी को मिलाया। हिम्मत बहादुर को जब सेन्धिया ने हरा दिया था तब वह सेन्धिया /सिन्धिया की सेना में नौकर हो गया था। हिम्मत बहादुर को बुन्देलखण्ड का सब हाल मालूम था और अली बहादुर किसी प्रकार हिम्मत बहादुर से मित्रता कर लेना चाहता था। हिम्मत बहादुर बड़ा समझदार मनुष्य था, उसने अपना लाभ अली बहादुर की मित्रता में समझा। सेन्धिया की नौकरी छोड़ दी और अली बहादुर को सहायता देने का वचन दे दिया। अली बहादुर ने हिम्मत बहादुर को देश का कुछ भाग देने का वचन दिया और हिम्मत बहादुर ने अली बहादुर को बान्दा का नवाब बना देने की प्रतिज्ञा की।

अली बहादुर के साथ पूना से बहुत सी भेजी गई थी। कई मराठों के प्रसिद्ध सरदार अली बहादुर के साथ आए थे। इस बड़ी सेना की सहायता के लिए हिम्मत बहादुर की 20 हजार सैनिकों की सेना भी मिल गई। जब सेन्धिया ने देखा कि हिम्मत बहादुर अली बहादुर के पास चला गया तब उन्होंने अली बहादुर को एक पत्र लिखा और हिम्मत बहादुर को वापस मांगा परन्तु अली बहादुर ने हिम्मत बहादुर को वापस नहीं किया।

बान्दा में इस समय बखत सिन्ह का राज्य था। बखत सिन्ह सम्वत् 1835 में गुमान सिन्ह के मरने पर राजगद्दी पर बैठा था। गुमान सिन्ह के कोई पुत्र ना था इसलिए उन्होंने अपने सम्बन्धि दुर्गा सिन्ह के पुत्र बखत सिन्ह को गोद लिया था। जिस समय बखत सिन्ह राजगद्दी पर बैठा उस समय उनकी उम्र बहुत कम थी। उनकी ओर से राज्य कार्य इनके दीवान और सेनापति नोंने अर्जुन सिन्ह देखते थे।

नोंने अर्जुन सिन्ह पहले चरखारी के राजा के यहां नौकर थे, परन्तु चरखारी के राजा से इनकी अनबन हो गई इसलिए यह फिर बान्दा के राजा के यहां नौकर हो गए। इन्होंने हिम्मत बहादुर को हराकर यमुना के पार भगा दिया था। जब गुमान सिन्ह और चरखारी के राजा खुमान सिन्ह के बीच युद्ध हुआ तब नोंने अर्जुन सिन्ह ने खुमान सिन्ह को हराया और युद्ध में खुमान सिन्ह की मृत्यु हो गई। अर्जुन सिन्ह ने गठेवरा के युद्ध में भी विजय पाई थी।

बखत सिन्ह छोटा था इस लिए अर्जुन सिन्ह उन्हें लेकर अजयगढ़ में रहने लगे। चरखारी के राज्य से भी इस समय अनबन थी। अली बहादुर और हिम्मत बहादुर ने अजयगढ़ पर आक्रमण किया। अर्जुन सिन्ह ने हिम्मत बहादुर से युद्ध किया। यह युद्ध अजयगढ़ और बनगांव के बीच के मैदान में हुआ और इस युद्ध में अर्जुन सिन्ह मारे गए और हिम्मत बहादुर की जीत हुई। युद्ध के पश्चात बान्दा पर अली बहादुर का अधिकार हो गया। यह युद्ध विक्रम सम्वत् 1849 वैशाख सुदी 12 बुधवार 18 अप्रैल 1792ई को हुआ था।

अर्जुन सिन्ह को बुन्देलखण्ड के बड़े और वीर पुरुषों में गिना जाता था परन्तु उनके पास अधिक सेना न होने से उनकी हार हुई। अली बहादुर और हिम्मत बहादुर के पास असन्ख्य सेना और धन था। इस सेना से सामना करना एक कठिन कार्य था। हिम्मत बहादुर ने जिसका सहारा लेना, उचित जान पड़ा, ले लिया। यदि हिम्मत बहादुर और अर्जुन सिन्ह की तुलना की जाए तो हिम्मत बहादुर प्रत्येक दृष्टि से श्रेष्ठ जान पड़ते हैं।

अर्जुन सिन्ह की हार के पश्चात अली बहादुर और हिम्मत बहादुर का डर सारे बुन्देलखण्ड में हो गया। चरखारी का राजा हिम्मत बहादुर का सहायक तो था परन्तु फिर भी जान पड़ता है कि चरखारी के राजा से भी अनबन हो गयी इसलिए हिम्मत बहादुर ने चरखारी पर भी चढ़ाई की थी। चरखारी के राजा की सहायता को बिजावर के वीर सिन्ह भी पहुन्चे थे। इस युद्ध में चरखारी के पास वीर सिन्ह की मृत्यु हो गई। इससे चरखारी और बिजावर के राजा अली बहादुर के अधीन हो गए लेकिन वह इन राज्यों के राजा बन रहे और अली बहादुर को चौथ देने लगे।

अर्जुन सिन्ह के मरने पर बखत सिन्ह भागे। बान्दा और अजयगढ़ पर अली बहादुर का अधिकार हो गया। अली बहादुर ने बान्दा का नवाब का विरुद/उपाधि स्वयम् ही धारण किया। बखत सिन्ह ने अपनी आजीविका का कोई उपाय न देखकर, अली बहादुर के यहां ही नौकरी कर ली। अजय गढ़ का राज्य फिर अन्ग्रेजो ने भगत सिन्ह को दिया।

अली बहादुर बान्दा में रहने लगा और उसने अपने राजधानी भी बान्दा ही बनाई। अली बहादुर को पेशवा से सदा सहायता मिलती रही और अली बहादुर पेशवा के अधीन रहा इस तरह से पेशवा का अधिकार फिर से बुन्देलखण्ड के राज्यों पर अली बहादुर के कारण हो गया।

अली बहादुर के पास यशवन्त राव नाम का एक बहादुर सैनिक था। अली बहादुर ने इसके साथ 10000 की सेना देकर सम्वत् 1853 में रीवा पर आक्रमण करने भेजा। उसे समय रीवा में बघेल राजा अजीत सिन्ह राज्य करता था। उसने अपनी सेना कलिन्दर सिन्ह कलचुरी के सेनापतित्व में भेजी जो यशवन्त राव की सेना से हार गई। अन्त में राजा ने ₹100000/– नगद देकर अली बहादुर से सन्धि कर ली।

पर कुछ लोगों का कहना है कि सम्वत् 1853 के युद्ध में अली बहादुर को हार का मुंह देखना पड़ा और इससे उसका दबदबा बुन्देलखण्ड से उठ गया। अवसर का लाभ उठाते ही राजा लोग अली बहादुर से स्वतन्त्र होने का प्रयत्न करने लगे, यह हाल देखकर अली बहादुर बहुत घबराया और पूना के पेशवा से सहायता मांगने के लिए दूत भेजा। हिम्मत बहादुर ने अली बहादुर को हिम्मत दी और सेना तैयार करने का काम आरंभ कर दिया। कुछ दिन के पश्चात पूना से भी सहायता आ गई। इस सेना की सहायता से अली बहादुर ने पहले जैतपुर पर आक्रमण किया। जैतपुर में इस समय गज सिन्ह का राज्य था। गज सिन्ह ने भी अली बहादुर से लड़ने की तैयारी कर ली थी, परन्तु अली बहादुर ने

जैतपुर की सेना को हरा दिया और राजा को बाहर निकाल कर उस राज्य पर अधिकार कर लिया। अजयगढ़ में भी कुछ सेना ने अली बहादुर से लड़ने का प्रयत्न किया परन्तु अली बहादुर ने इन्हें भी अच्छी तरह से हरा दिया।

बुन्देलखण्ड में अपना अधिकार जमाने के बाद, अली बहादुर ने रीवा पर यशवन्त राव की मृत्यु का बदला लेने के लिए चढ़ाई की। रीवा के राजा को हिम्मत बहादुर ने हरा दिया। रीवा नरेश ने अली बहादुर को प्रतिवर्ष 12 लाख रुपए चौथ के रूप में देने का वचन दिया।

हिम्मत बहादुर के युद्ध

अली बहादुर ने रीवां राजा को हरा दिया परन्तु कालिन्जर के चौबे ने अली बहादुर के अधीनता स्वीकार नहीं की। कालिन्जर का किला कायम जी चौबे के पुत्र रामकिषन के अधिकार में था। चौबे वास्तव में जागीरदार था परन्तु अब पन्ना राज्य से स्वतन्त्र हो गया था और अली बहादुर का आधिपत्य भी स्वीकार नहीं करता था।

वास्तव में देखा जाए– अली बहादुर को जहां–जहां पर विजय प्राप्त हुई, उसका मूल कारण हिम्मत बहादुर की वीरता ही थी। कालिन्जर का किला को वश में करने के लिए अली बहादुर ने हिम्मत बहादुर से सलाह की, कालिन्जर का किला बहुत ऊन्चे पहाड़ पर है बहुत सुडौल बना हुआ है, इसको लेने के लिए हिम्मत बहादुर ने बहुत भारी तैयारी की, फिर किले पर आक्रमण किया। किला दुर्भेद्य होने के कारण से वह किसी प्रकार भी हिम्मत बहादुर के अधिकार में नहीं आ सका। हिम्मत बहादुर और अली बहादुर दोनों ने प्रयत्न नहीं छोड़ा और किले को लेने के लिए यह लोग लड़ते ही रहे। जब दोनों को लगा कि किला जीतने में कई वर्ष लग जाएंगे, तब अली बहादुर और हिम्मत बहादुर ने किले के समीप मैदान में रहने के लिए मकान भी बनवा दिए। यहां से हिम्मत बहादुर 2 वर्ष तक बराबर लड़ते रहे, पर कलिन्जर का किला उनके हाथ में नहीं आया। इसी युद्ध के समय, सम्वत् 1859 में अली बहादुर की मृत्यु हो गई लेकिन उसके मरने पर भी हिम्मत बहादुर ने कालिन्जर लेने का प्रयत्न नहीं छोड़ा। हिम्मत बहादुर की ओर से सबसुखराम सेनापति थे।

अली बहादुर के दो लड़के थे जिनके नाम शमशेर बहादुर और जुल्फिकार अली था। इनमें से शमशेर बहादुर बड़ा था, परन्तु जब अली बहादुर की मृत्यु हुई तब शमशेर बहादुर पूना में था, इसलिए अली बहादुर के चाचा गनी बहादुर और हिम्मत बहादुर ने मिलकर जुल्फिकार अली को ही अली बहादुर की जगह नवाब बना दिया। यह समाचार शमशेर बहादुर को पूना में पता चला। समाचार पाते ही शमशेर बहादुर पेशवा से सहायता लेकर कालिन्जर जा पहुन्चे। पेशवा भी गनी बहादुर से नाराज थे। गनी बहादुर ने जुल्फिकार अली को नवाब बनकर, सब राज्य कार्य अपने हाथ में कर लिया था। गनी बहादुर वास्तव मे स्वतन्त्र ही हो गया था। पेशवा से उसका कोई सम्बन्ध नहीं रह गया, इस कारण पेशवा ने शमशेर बहादुर को सहायता देना ठीक समझा। शमशेर बहादुर ने मराठो की सेना की सहायता से अली बहादुर का राज्य अपने अधिकार में कर लिया और कालिन्जर में जाकर गनी बहादुर को पड़कर अजयगढ़ के किले में कैद कर दिया। इसी किले में गनी बहादुरपुर को शमशेर बहादुर ने जहर दिलवाकर मार डाला। हिम्मत बहादुर का सहायक गनी बहादुर ही था, जब उसने देखा कि गनी बहादुर मार डाला गया है, तब उसने भी शमशेर बहादुर से सब सम्बन्ध तोड़ दिए। अभी तक जो कुछ युद्ध हुए थे, उनकी जीत में हिम्मत बहादुर ही मुख्य कारक था। अब जब शमशेर बहादुर ने देखा की हिम्मत बहादुर ने सहायता देना बन्द कर दिया है तब उसने भी कालिन्जर के किले को लेने का प्रयत्न छोड़ दिया और वह बान्दा को वापस आ गया।

हिम्मत बहादुर ने बान्दा के नवाब को सहायता देकर बुन्देलखण्ड का बहुत सा भाग बान्दा के नवाब के अधिकार में करा दिया था। हिम्मत बहादुर ने देखा कि नवाब से अनबन होने के कारण कोई लाभ नहीं पहुन्च सकेगा इसलिए उसने अन्ग्रेजों से बातचीत आरंभ किया। विक्रम सम्वत् 1859 में मराठों और अन्ग्रेजों के बीच बसीन नामक नगर में एक सन्धि हुई जिसके अनुसार बाजीराव ''पेशवा'' हुआ और उसने अन्ग्रेजों का आधिपत्य स्वीकार किया परन्तु इस सन्धि से सब मराठे सरदार असन्तुष्ट थे और थोड़े ही दिनों में पेशवा ने फिर से अन्ग्रेजों से स्वतन्त्र होने का प्रयत्न किया। जिस समय हिम्मत बहादुर ने अन्ग्रेजों से मेल करने की बातचीत की उस समय अन्ग्रेज बड़े प्रसन्न हुए क्योंकि

उन्हें हिम्मत बहादुर की सहायता से मराठों को दबाने का मौका मिल गया। अगर मराठे हिम्मत बहादुर को साथ रखते तो शायद इतिहास कुछ और होता। ऐसे समय में अन्ग्रेजों को हिम्मत बहादुर की सहायता बहुत लाभदायक प्रतीत हुई। हिम्मत बहादुर की वीरता सारे क्षेत्र में प्रसिद्ध थी। बुन्देलखण्ड के प्रत्येक भाग का उसे पूरा ज्ञान था अतः अन्ग्रेज लोगों को लगा कि वह बहुत सहायता पहुन्चा सकता था।

हिम्मत बहादुर की सेना में कर्नल मिसेल बैक नामक एक सरदार था। अन्ग्रेजो की ओर से हिम्मत बहादुर की बातचीत इसी की सहायता से हुई। हिम्मत बहादुर ने जो जो शर्तें अन्ग्रेजों से कही, अन्ग्रेजों ने सारी शर्तें मान ली। अन्ग्रेजों ने हिम्मत बहादुर से राजा के समान बर्ताव करने की प्रतिज्ञा की। उन्होंने यह भी प्रतिज्ञा की कि वह हिम्मत बहादुर के भाई उमराव गिरी को अवध के नवाब के बन्धन से मुक्त करा देंगे। अन्ग्रेजों ने अन्तर्वेद में सिकन्दरा परगना और बिन्दकी परगना हिम्मत बहादुर को देने का वचन किया। बुन्देलखण्ड में भी हिम्मत बहादुर को एक लाख की जागीर देने की प्रतिज्ञा अन्ग्रेजों ने की। यह शर्तें करा के हिम्मत बहादुर ने अन्ग्रेजों की सहायता की, जैसा की सिन्धिया और अन्य मराठे भी कर रहे थे। अन्ग्रेजों ने हिम्मत बहादुर से प्रसन्न होकर उसकी महाराजा बहादुर की पदवी भी दी।

इस समय अन्ग्रेजों का राज्य बन्गाल और बिहार में स्थिर हो गया था और बनारस तक पहुन्च गया था मुंबई के निकट कई नगर भी अन्ग्रेजों के अधिकार में थे इसके सिवा कई राजा लोग अन्ग्रेजों के अधीन हो चुके थे। हिम्मत बहादुर और अन्ग्रेजों की सन्धि का हाल सुनते ही, शमशेर बहादुर ने फिर पेशवा से सहायता मांगी। इस समय सिन्धिया, होल्कर आदि सब मराठे सरदार अन्ग्रेजों के विरुद्ध हो रहे थे। इस समय जालौन में गोविन्द राव गंगाधर उर्फ़ नाना साहब सूबेदार थे और इन सब लोगों ने शमशेर बहादुर की सहायता के लिए अपनी सेना भेजी।

हिम्मत बहादुर के पास भी बहुत बड़ी सेना थी और इस सेना का खर्च हिम्मत बहादुर को अन्ग्रेजों से मिल रहा था। अन्ग्रेजों का एक सेनापति कर्नल पॉल भी अपनी सेना लिए हुए हिम्मत बहादुर के साथ था। यह सब सेना लेकर हिम्मत बहादुर बुन्देलखण्ड में घुसा और पहला युद्ध केन नदी के किनारे बरा नामक गांव के पास हुआ, शमशेर बहादुर इस युद्ध में हार गया और भागना पड़ा। शमशेर भौरागढ़ पहुन्च परन्तु यहां पर भी हिम्मत बहादुर ने उसे हराया। इसके पश्चात कैषा नामक ग्राम में तीसरी लड़ाई हुई, यहां पर शमशेर बहादुर अच्छी तरह से हरा दिया गया। शमशेर बहादुर यहां से भागा और अन्ग्रेजों ने उसका पीछा किया। परेशान दुखी होकर शमशेर बहादुर ने अन्ग्रेजों से सन्धि कर ली। यह सन्धि अन्ग्रेजों की ओर से कप्तान बेली और शमशेर बहादुर के बीच हुई, जो विक्रम सम्वत् 1861 में हुई।

हमेशा की तरह जैसा कि अन्य लोगों के साथ भी हुआ, युद्ध में अन्ग्रेजों के विजय का कारण हिम्मत बहादुर ही था। हिम्मत बहादुर बहुत ही शूर सैनिक था, परन्तु उसे जो कुछ सामने दिखा बिना परिणाम सोचे, कर डाला। अवध के नवाब की हार होने पर, वह सिन्धिया से मिल गया। सिन्धिया के विरुद्ध होकर फिर वह अली बहादुर से मिल गया। बाद में अली बहादुर के लड़के के विरुद्ध होकर वह अन्ग्रेजों से मिल गया और अन्त में हिम्मत बहादुर को अन्ग्रेजों से शर्तों के अनुसार अन्तर्वेद के परगना और बुन्देलखण्ड में मौदहा, छौन, हमीरपुर और दौसा के परगना मिले। इस समय तक हिम्मत बहादुर बहुत वृद्ध हो गया था और थोड़े ही दिनों में विक्रम सम्वत् 1861 में उसकी मृत्यु हो गई।

हिम्मत बहादुर के मरने पर उसका पुत्र निरन्द गिरी उर्फ नरेन्द्र गिरी, हिम्मत बहादुर की जागीरो का उत्तराधिकारी बना परन्तु नरेन्द्र गिरी की अवस्था बहुत कम थी, इस कारण हिम्मत बहादुर का भाई उमराव गिरी उन जागीरो की देखभाल करता था। यह वही उमराव गिरी है जो पहले अवध के नवाबों के यहां कैद था परन्तु अन्ग्रेजों ने इसे छुड़वा दिया। विक्रम सम्वत् 1897 में नरेन्द्र मर गया और नियम हमेशा की तरह अन्ग्रेजों ने उसकी जागीर जब्त कर ली, उसे समय उमराव गिरी के खर्च के लिए अन्ग्रेजों की ओर से **₹**1000 मासिक मुकर्रर हुए और नरेन्द्र गिरी के भाई कन्चन गिरी को **₹**2000/– मासिक मुकर्रर किए गए। इनके मरने के बाद उनके वन्शजों को अन्ग्रेजों की ओर से पेन्शन दी गई।

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

अन्ग्रेजों ने शमशेर बहादुर को चार लाख रुपए की पेन्शन देकर, बान्दा को अपने अधिकार में कर लिया और शमशेर बहादुर को वहां से हटा दिया गया। थोड़े ही दिनों के बाद इस वर्ष अर्थात विक्रम सम्वत् 1861 में शमशेर बहादुर भी मर गया। शमशेर बहादुर के बाद उसके भाई जुल्फिकार अली और उनके लड़के अली बहादुर को चार लाख की पेन्शन मिली और यह लोग बान्दा के नवाब कहलाते रहे जबकि अन्ग्रेजों ने बान्दा को अपने अधिकार में कर लिया था। उनके वन्शज बान्दा में न होकर इन्दौर में रहते हैं जिन्हें 1933 ईस्वी में सालाना पेन्शन के रूप में रु13000/– मिलते थे।

देखा जाए, पूरी उम्र हिम्मत बहादुर ने हिम्मत के साथ खूब लड़ाइयां लड़ी, अधिकान्श जीती भी और अन्य राजा जमीन्दारों की तरह वह राज्य करता भी रहा और जहां भी अपना भला दिखाई दिया, उसी का साथ भी दिया जैसा कि उस वक्त के सभी राजा, जमीन्दार, पेशवा, मराठा किया करते थे।

हिम्मत बहादुर का जीवन परिचय

गोसाई –पहला राजा इन्द्र गिरी मृत्यु सम्वत् 1809
अनूप गिरी –उर्फ हिम्मत बहादुर उर्फ महाराजा बहादुर
–सनाढ्य ब्राह्मण पुत्र
–राजा इन्द्र गिरी का षिश्य
अनूप गिरी के गुरु –राजा इन्द्र गिरी
अनूप गिरी उर्फ हिम्मत बहादुर के पुत्र
1 –निरन्द गिरी उर्फ नरेन्द्र गिरी और
2 –कन्चन गिरी
अनूप गिरी उर्फ हिम्मत बहादुर का भाई –
1 –उमराव गिरी

सम्वत् 1849, वैशाख बदी 12 बुधवार उर्फ 18 अगस्त 1792 ई के युद्ध का वर्णन बान्दा के कवि पद्माकर ने "हिम्मत बहादुर विरदावली" में किया है। उसमें अर्जुन सिन्ह का हिम्मत बहादुर के हाथ से मारा जाना लिखा है, अर्जुन सिन्ह अपने ही घराने के एक मनुष्य के भाले से मारे गए थे। यह मनुष्य चरखारी का ही था और चरखारी का राजा हिम्मत बहादुर का सहायक था। अतः कहा जा सकता है कि हिम्मत बहादुर के द्वारा ही मारा गया। 1

हिम्मत बहादुर भिक्षा वृत्तिधारी सनाढ्य ब्राह्मण का लड़का था और गोसाई इन्द्र गिरी का चेला था। इन्द्र गिरी के मृत्यु सम्वत् 1809 में हुई और उसके पश्चात उनका चेला अनूप गिरी उर्फ हिम्मत बहादुर उर्फ महाराजा बहादुर अवध में सेना का सरदार हो गया। हिम्मत बहादुर ने ब्राह्मण वीर्य तथा गोसाई धाम का शिव भक्त होकर समय अनुसार सहायता की और राज्य भी किया। हिम्मत बहादुर हमेशा दूसरों की सहायता का प्रयासी ही रहा क्योंकि यह अकेला पड़ गया था। गोसाई बहुत ज्यादा नहीं थे अतः सभी तरफ से दबाया जा रहा था। हिम्मत बहादुर अपने स्वयम् के विचार के अनुसार लड़ाई करता था और इतना बहादुर था कि बुन्देलखण्ड का एक–एक नफा नुकसान, इलाका व सेना जानकारी का माहिर था। लोगों के अनुसार, हिम्मत बहादुर ने बढ़ती उम्र में अपने चाल चलन में धब्बा लगा लिया था जो कि एक वीर पुरुष के लिए कथित रूप से निन्दा की बात हो सकती है अन्यथा देखा जाए तो अधिकान्श पेशवा व राजा भी इसी तरह का धब्बा लगाए हुए थे। मस्तानी बाइ का केस अलग नहीं है। हिम्मत बहादुर ने कभी देश द्रोह नहीं किया, जिसके साथ रहा तन मन धन से साथ रहा और उसका साथ दिया और उसके युद्ध को विजय में परिवर्तित किया। हर राजा उसको अपने साथ लेना चाहता था और वह भी किसी के सापेक्ष में देशद्रोही या देशभक्त होते हैं। अर्जुन सिन्ह का इजाद किया हुआ लग्गी नाम का रणवाद्य आज भी बुन्देलखण्ड में प्रचलित है। लाला भगवान दीन द्वारा सम्पादित "हिम्मत बहादुर विरदावली" में इसका उल्लेख है। 2, 3

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

बान्दा हिस्ट्री–गोसाई

लेखक अरविन्द कुमार त्रिपाठी जब आसपास के गांव में भ्रमण के लिए गया तो उसने देखा कि गांव के बाहर की तरफ कुछ मन्दिर की तरह की छतरियां बनी हुई है जिनके अन्दर कुछ भी नहीं है और बाहर भी कुछ नहीं लिखा हुआ है। बुजुर्गों से प्रार्थना करने पर पता चला कि यह गुसाईयों की समाधि स्थल और इन्हीं के आसपास कहीं ना कहीं एक शिव मन्दिर अवश्य मिलेगा जो मिले भी। अछरौन्ड गांव में भी तालाबों के किनारो पर कुछ समाधि स्थल मिले जिन्हें राजस्थान में छतरी भी कहा जाता है और गांव में उनको समाधि स्थल बोलते रहे हैं। इससे पता चलता है कि हिम्मत बहादुर जो एक शिष्य बनकर गोसाई हो चुका था, की सेना ने इन बान्दा के आसपास के गांव में अपने लोग पहुन्चाए थे और गांव में रहते हुए उन्होंने अपने लिए समाधि स्थल भी बनाए। बान्दा और आसपास का इलाका गोसाईयों के अधीन रहा है, सिद्ध करता है। बान्दा और आसपास के इलाके में आजकल कोई भी गोसाई नजर नहीं आता। गोसाई लोगों ने अपने जमीन जायदाद घर सब कुछ स्थानीय लोगों को बेच दिया और यहां से पलायन कर गए जो कि उनकी परिस्थितियों को जाहिर करता है।

बान्दा में भी महेश्वरी देवी रोड छोटी बाजार बान्दा में एक गोसाईगंज है जहां राधा कृष्ण का मन्दिर बहुत प्रसिद्ध है। इसके अलावा बान्दा के आसपास मवई गांव में गोसाई तालाब भी है।

विक्रम सम्वत् 1746 के लगभग, बन्गस ने बुन्देलखण्ड पर आक्रमण किया। बान्दा व सेहुड़ा (दतिया से 36 मील काली सिन्ह के किनारे है) पर आक्रमण कर दिया, पर मराठों की सहायता के लिए मोहम्मद खान बन्गस को ग्वालियर की ओर जाना पड़ा। जब बन्गस को ग्वालियर की ओर जाना पडा तो छत्रसाल ने बन्गस के प्रदेशों पर आक्रमण कर दिया। उस समय बन्गस की सेना में सिपाहियों को ₹17/– और जमीन्दारों को ₹20/– प्रतिमाह मिलते थे और यह, बन्गस ने उनकी तनख्वाह बढ़ाकर दी थी।

मौदहा के जागीरदार जय सिन्ह ने भी छत्रसाल के विरुद्ध लड़ना स्वीकार कर लिया था और अन्य अधिकान्श लोगों ने मोहम्मद खान बन्गश को सहायता देना उचित समझा।

विक्रम सम्वत् 1860 (04–09–1803 ई) में हिम्मत बहादुर ने सिन्धिया की नौकरी छोड़कर अली बहादुर के यहां सेनापति की नौकरी की। एक से राजा को छोड़, दूसरे राजा के यहां काम करना उसे समय एक सामान्य सी बात लगती थी। अली बहादुर की मृत्यु के बाद हिम्मत बहादुर स्वयम् स्वतन्त्र होना चाहता था। अन्ग्रेजों ने हिम्मत बहादुर से बात करने की कोशिश की, तो हिम्मत बहादुर ने अली बहादुर की नौकरी छोड़कर शाहपुर जाकर अन्ग्रेजों से सन्धि कर ली और अन्ग्रेजों ने अपनी सहायता के लिए सेना रखने को 20 लाख रुपए की जागीर देने का वचन दिया तथा कुछ इलाका भी इसकी जागीर में छोड़ दिया और इस तरह से इसका राज्य इलाहाबाद से कालपी तक हो गया। इस समय अन्ग्रेज और पेशवा मुख्यतः दो ही लोग थे और बाकी सब लोग इन्हीं दोनों में से किसी एक के हितैषी बनकर रहना चाहते थे यहां तक की पुणे में भी अन्ग्रेजों से सन्धि की।

इसी सन्धि के समय शमशेर बहादुर भी पुणे से आ गया और यह भी अन्ग्रेजों से मिलकर रहना चाहता था। विक्रम सम्वत् 1860 (12 जनवरी 1804) में इसने भी सन्धि कर ली। अन्ग्रेजों ने चार लाख की जागीर दी और बान्दा रहने के लिए दिया। इस समय बुन्देलखण्ड में छोटी बड़ी कुल 43 रियासतें और जागीर थी जिनमें से कुछ अन्ग्रेजों से मिल गए, कुछ ने सन्धिया कर ली, कुछ को सनदें दे दी गई। अन्ग्रेजों को पुणे की सन्धि से पूरा बुन्देलखण्ड ही मिल गया।

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

राजा खुमान सिन्ह के मरने पर विक्रमाजीत उर्फ विजय बहादुर राजा हुआ। इनसे और इनके चचेरे भाई बान्दा के राजा अर्जुन सिन्ह से हमेशा झगड़े होते रहे, अन्त में अर्जुन सिन्ह ने इन्हें चरखारी में हराकर भगा दिया। जब अली बहादुर ने हिम्मत बहादुर के साथ विक्रम सम्वत् 1846 में बुन्देलखण्ड पर चढ़ाई की तब यह उससे मिल गए और चरखारी की लड़ाई में उसके साथ हो गए।

अजयगढ़ के राजा गुमान सिन्ह के समय, पंडित राजाराम तिवारी भूरागढ़ के किलेदार थे और उनके प्रपितामह विद्यापति तिवारी मलपुरा(चरखारी रियासत) में रहते थे। राजाराम जी के पीछे से राजा गुमान सिन्ह से सन्बन्ध बिगड़ गए और धीरे–धीरे स्वतन्त्र हो गए। अली बहादुर ने इन पर भी चढ़ाई की पर लाभ न हुआ। इन्होंने बड़ी बहादुरी से उनका सामना किया, पीछे से यह लूटपाट करने लगे, इससे अशांति छा गई।

अजयगढ़ के राजा और अन्ग्रेजो में सन्धि हो गई। बड़ा काम करने के बजाय, उनके अनुसार राजाराम तिवारी को दबाकर शांति रखना राजा का पहला काम था और ऐसा करना उनकी शक्ति के बाहर था, इसके लिए कम्पनी की सरकार ने इन्हें पकड़ने के लिए ₹30,000/– का पारितोषिक मुकर्रर किया परन्तु घोषणा के पूर्व, उन्होंने बुन्देलखण्ड के राजा लोगों के समान जागीर मिलने की शर्त पर, आत्म समर्पण कर दिया, उन्होंने अपनी राजधानी गौरीहार नियत की।

1 फरवरी सन 1817 को, पेशवाई का काम और अन्ग्रेजों का राज्य, सम्वत् 1863 की सन्धि की शर्त के अनुसार, थी, और यह शर्तें सन्धि के मुख्य शर्तों में से एक थी। इस सन्धि के अनुसार निम्नलिखित गांव अन्ग्रेजों को मिले–

खण्डेह, खुई, चादें बुजुर्ग, घरछेई, हरदौली, खैरार, अछरौड, बिहन्गा, कमासिन, हरयोली, फतेहपुर, रतवा, अपहोली, रेवन्द, अकिहानी, बिहनी, अमखार, चमारकथा, खरा, झरखा, लचहरा, कदार, कोदसा, खजहा, कमखूर, हटा, अकौना, भयानी, सदोई, करिधा, नूरपुर, खैरा, सरौली, कन्जुला, सोटई, सिरसईकलॉ, सिरसईखुर्द, अधारीपुरना, कुस्यारी, खरदई, माफी, खमरिया, कलकया, जरारा, लोई, मानपुर और नकरई आदि। इसके अलावा और भी कुछ गांव हो सकते हैं। ध्यान में रखने वाली बात भी है इसमें अछरौड गांव भी है।

रानी लक्ष्मी बाई, झान्सी से 3 अप्रैल सन 1858, को अपना किला छोड़कर चली गई थी और भांडेर नामक ग्राम में पहुन्ची। यहां पर अन्ग्रेजों की सेना भी पहुन्च गई और रानी के पास इस वक्त कोई सेना नहीं थी।

कालपी में लड़ाई का बहुत सारा सामान इकट्ठा था। कालपी के राव साहब ने रानी लक्ष्मीबाई का स्वागत किया। राव साहब ने रानी के कथनानुसार अन्ग्रेजों से युद्ध करने का निश्चय किया। बान्दा के नवाब अली बहादुर भी अन्ग्रेजों के विरुद्ध थे। उनके पास भी बड़ी सेना थी। यह भी अपनी सेना लेकर कालपी के पास आकर राव साहब से मिले और इधर सागर के राजा बखतबली जिन्हें अन्ग्रेजों ने सागर जिले में हरा दिया अब फिर से सेना इकट्ठी करके, कालपी पहुन्चे। बानपुर के मर्दनसिन्ह भी अपनी सेना के साथ यहां आए सब सेना की कवायद राव साहब ने सम्भाली और सर्वसम्मति से इस सेना के नायक तात्या टोपे बनाए गए।

सर ह्यू रोज अन्ग्रेजी सेना को लेकर कालपी की ओर चले। कालपी पर हरदोई और उरई की ओर से चढ़ाई की। कालपी पर महारानी लक्ष्मीबाई ने एक सेना अपने अधिकार में रखी। दोनों ओर से गोलों की वर्षा हुई और खूब लड़ाई हुई रानी लक्ष्मीबाई ने हारती हुई सेना को बहुत साहस दिया परन्तु अन्ग्रेजों के आगे टिक न सके, कालपी पर कब्जा कर लिया गया। रानी लक्ष्मीबाई, राव साहब पेशवा और बान्दा के नवाब कालपी छोड़कर चले गए।

जिस समय सर ह्यू रोज झान्सी की रानी के साथ युद्ध में लगे हुए थे, उसी समय जबलपुर की सेना के नायक व्हिटलाक पूर्व की ओर, बलवा करने वालों का दमन कर रहे थे। बान्दा में जो राज विद्रोह हुआ था, नायक व्हिटलाक ने ही शांत किया और फिर ये सर ह्यू रोज की सहायता करने कालपी पहुन्चे।

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

राज विद्रोह शान्त हो जाने पर, बुन्देलखण्ड में कोई झगड़ा नहीं हुए। राज विद्रोह के समय अन्ग्रेजों की ओर से, लॉर्ड केनिंग गवर्नर थे। जब कम्पनी के हाथ से, अन्ग्रेजी राज्य इंग्लैंड की महारानी विक्टोरिया के हाथ में आया, तब लॉर्ड केनिंग भारत के अन्ग्रेजी राज्य के वायसराय कहलाए। झांसी, जालौन, बान्दा, हमीरपुर और ललितपुर के जिले अन्ग्रेजी के पश्चिमोत्तर प्रदेश में थे। बाद में इस प्रदेश का नाम संयुक्त प्रदेश रखा गया।

बुन्देलखण्ड के देसी राज्यों का क्षेत्रफल, जनसन्ख्या, आमदनी और राजाओं की उपाधियां
सन 1921 ई की जनगणना के अनुसार

	राज्य का नाम	क्षेत्र वर्ग मील में	जनसन्ख्या	आमदनी रु वार्षिक	उपाधियां जो अन्ग्रेजों ने दी
1	ओरछा	2079	284948	10 लाख	हिज हाईनेस
2	दतिया	911	148659	18 लाख	हिज हाईनेस
3	समथर	180	33216	3.5 लाख	हिज हाईनेस
4	पन्ना	2596	197600	10.25 लाख	हिज हाईनेस
5	चरखारी	880	123405	6.75 लाख	हिज हाईनेस
6	अजयगढ़	802	84790	3.25 लाख	हिज हाईनेस
7	बिजावर	973	5111723	3 लाख	हिज हाईनेस
8	बावनी	121	197347	2 लाख	हिज हाईनेस
9	छतरपुर	1130	166549	5.25 लाख	हिज हाईनेस
10	अलीपुर	73	14580	50000	राजा
11	बान्का पहाड़ी	5	1613	4000	दीवान
12	बेरी	32	4621	40000	राव
13	बिहट	16	4786	27000	राव
14	बिजना	8	1451	7000	दीवान
15	धुरबाई	15	1880	14000	दीवान
16	गर्रौली	39	4817	35000	दीवान
17	गौरिहार	71	9486	50000	पंडित
18	जिगनी	20	3642	14000	राव
19	जुगासी	45	6182	30000	दीवान
20	नैगवां	12	2113	14000	कुअर
21	सरीला	35	6081	60000	राजा
22	टोड़ी फतेहपुर	36	6580	29000	दीवान

ऊपर की सारणी देखने पर लगता है कि इसमें बान्दा कहीं भी नहीं है या यह कहे की 1921 ईस्वी में बान्दा कहीं भी नहीं था।

	राज्य का नाम	उपाधियां जो अन्ग्रेजों ने दी
1	ओरछा	हिज हाईनेस
2	दतिया	हिज हाईनेस
3	समथर	हिज हाईनेस
4	पन्ना	हिज हाईनेस
5	चरखारी	हिज हाईनेस
6	अजयगढ़	हिज हाईनेस
7	बिजावर	हिज हाईनेस
8	बावनी	हिज हाईनेस
9	छतरपुर	हिज हाईनेस
10	अलीपुर	राजा
11	बान्का पहाड़ी	दीवान
12	बेरी	राव
13	बिहट	राव
14	बिजना	दीवान
15	धुरबाई	दीवान
16	गर्रौली	दीवान
17	गौरिहार	पंडित
18	जिगनी	राव

19	जुगासी	दीवान
20	नैगवां	कुअर
21	सरीला	राजा
22	टोड़ी फतेहपुर	दीवान

उपर्युक्त सारणी के अनुसार 1921 ईस्वी तक बान्दा कहीं नहीं था।

पद्माकर

बान्दा में एक जगह का नाम है पद्माकर चौराहा। जहां पर कवि पद्माकर की मूर्ति भी लगी हुई है। उसी के पास एक जीर्ण शीर्ण मकान भी बना हुआ है जिसे पद्माकर का घर भी कहा जाता है।

पद्माकर का जन्म सम्वत् 1810 में सागर में हुआ था। यह दरबारी कवि थे और निश्चित रूप से मराठों के बारे में हर चीज को बढ़ा–चढ़ा कर लिखा। बाला जी व गंगाधर की मृत्यु की बाद मराठों की सत्ता को बड़ी चोट पहुन्ची। रघुनाथ राव ने राज्य प्रबन्ध उत्तम करने का प्रयास किया। उस समय उनके दरबार में कवि पद्माकर रहते थे। यह सिन्धिया और हिम्मत बहादुर के दरबार में भी रहे। पद्माकर अर्जुन सिन्ह के गुरु थे और एक तलवार सिद्ध करके उन्होंने अर्जुन सिन्ह को दी थी। जब हिम्मत बहादुर ने नोंने अर्जुन सिन्ह को हरा दिया है तब पद्माकर ने अर्जुन सिन्ह की कीर्ती नहीं गाई परन्तु ''हिम्मत बहादुर वीरदावली'' बनाई वैसे भी दरबार कवि जिसके दरबार में रहते थे उसके बड़ाई, हर चीज को बढ़ा–चढ़ा कर लिखना, उनके युद्ध में उनके बारे में सदा अच्छा लिखना। अगर कहीं कोई हीनता भी हो, उसको किसी न किसी तरीके से छुपाना या उसको यह सिद्ध करना कि यही सही था। अब हिम्मत बहादुर जीत गए थे तो पद्माकर हिम्मत बहादुर की तरफ आ गए और हिम्मत बहादुर वीरदावाली लिखी। 80 साल की उम्र में इनका देहान्त सम्वत् 1890 में हुआ।

रघुनाथ राव का देहांत 1859 में हुआ। पद्माकर कवि का बान्दा से केवल इतना ही सम्बन्ध है कि हिम्मत बहादुर को जब बान्दा की बागडोर मिली तो उन्होंने हिम्मत बहादुर के बारे में बहुत कुछ अच्छा लिखा शायद इस समय कुछ समय के लिए वह बान्दा में रहे।

मराठों के बराबर शक्तिशाली कोई दूसरा न था। बुन्देले लोग आपस की कलह के कारण हीन हो गए जो कि कलह का परिणाम होता ही है। सिखों का राज्य जम न पाया। यही हाल राजपूतों में भी था। राजपूतों में भी कोई एक्य नहीं था। इस कारण मराठों का डर सारे भारतवर्ष में पैठ कर गया। बुन्देलखण्ड मध्य भारत में होने के कारण, मराठे यहां से जिस और जाना चाहते थे, जा सकते थे। बुन्देले लोग आपस में लड़ते परन्तु मराठों को जब सहायता की आवश्यकता पड़ती थी, बुन्देले लोग प्रदान करते थे। लोगों की वीरता अतुलनीय थी, लेकिन ऐसे भी वीरता ता का क्या फायदा, जब इन लोगों में कोई एकता ही नहीं थी।

बुन्देलखण्ड मराठाओं को छत्रसाल महाराज ने दिया था, परन्तु अब ये ही बुन्देली लोग महाराज छत्रसाल के वन्शजों के ऊपर ही अधिकार किए बैठे थे। बुन्देलों की आपसी कलह ही इसका मूल कारण है।

छत्रसाल का परिवार

बुन्देलों और मुगलों के बीच जैतपुर के दक्षिण में एक बड़ी लड़ाई शुरू की। युद्ध में बुन्देलों ने अपनी वीरता का पूरा परिचय दिया। इस युद्ध के समय छत्रसाल और मोहम्मद खान बन्गश के हाथियों का आमना सामना हो गया और बन्गास ने अचानक अपनी बरछी फेक कर छत्रसाल को मारा। इस बरछी के घाव से राजा छत्रसाल मूर्छित हो गए और जैसा होता है राजा के गिरते ही बुन्देली भी पीछे हटने लग गए।

जिस प्रकार बुन्देलखण्ड में हिन्दू धर्म के रक्षक छत्रसाल थे उसी प्रकार दक्षिण में मराठे भी यवन सत्ता को दक्षिण से उठा देने का प्रयत्न कर रहे थे। इस सन्कट के समय महाराजा छत्रसाल ने मराठों की ही सहायता लेने का

निश्चय किया। उस समय मराठों में बाजीराव पेशवा ही नायक थे। छत्रसाल में एक पत्र बाजीराव पेशवा को लिखा और बाजीराव पेशवा ने बुन्देलखण्ड को ऐसे धर्म सन्कट के समय सहायता देना स्वीकार कर लिया।

बाजीराव पेशवा शाहू महाराज से अनुमति लेकर अपनी सेना के साथ बुन्देलखण्ड में छत्रसाल की सहायता को पहुचे। मालवा के सूबेदार को हराते हुए 22 दिनों में बुन्देलखण्ड पहुन्चे। बन्गस ने कई लड़ाइयां में बुन्देलों को हरा दिया था इसलिए उसे बहुत अभिमान हो गया। मराठों के आने का हाल सुनते ही कई हिन्दू राजा जो मुसलमानों का दिलो–जान से साथ दे रहे थे, छोड़कर अलग हो गए लेकिन औरछे के राजा का छोटा भाई लक्ष्मण सिन्ह और मौदहा का जागीरदार जय सिन्ह मुसलमान की सहायता करते रहे।

जिस समय राजा छत्रसाल ने पेशवा को सहायता के लिए बुलाया था उस समय राजा छत्रसाल में पेशवा को वचन दिया कि वह पेशवा को भी अपना एक पुत्र समझेंगे। ध्यान दें पुत्र नहीं है लेकिन पुत्र समझेंगे और पेशवा को अपने राज्य का एक भाग देंगे जब बाजीराव पेशवा युद्ध जीत कर पाना पहुन्चे तब पेशवा को अपने भाग की फिक्र याद आई।

राजा छत्रसाल के 69 पुत्र(बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास पृष्ठ 231) थे लेकिन बाजीराव पेशवा को मालूम हुआ कि राजा छत्रसाल के 56 पुत्र ही हैं, सम्भव है कि उन्हें शेष पुत्रों का हाल मालूम ना हुआ हो। छत्रसाल के बहुत विवाह हुए जिनमें 17 रानियां ज्ञात थी। पुत्रों की सन्ख्या का हाल जानकर बाजीराव ने सोचा यदि राज्य का 57वां हिस्सा मिला तो बहुत कम होगा। इस कारण बाजीराव चाहते थे कि ऐसी खुशी हर्ष के प्रसन्ग पर राजा छत्रसाल कोई बड़ा हिस्सा देने का वचन दे दे। जब राजा छत्रसाल में बाजीराव को अपना पुत्र कहा और बाजीराव को पुत्रों में बैठने की आज्ञा दी तब बाजीराव पेशवा को सन्तोष ना हुआ उन्होंने बहुत अनुनय वाक्य और चालाकी से भरे हुए शब्दों में निवेदन किया कि महाराज आपके 56 पुत्र हैं, इनमें मैं कहां पर बैठा हूं। बाजीराव के चातुर्य भरे वाक्य का अर्थ छत्रसाल समझ गए। उन्हें अधिक राज्य का लालच न था और वह चाहते थे कि उनके पुत्र भी लालची नहीं होने चाहिए। जो कुछ राज्य उन्होंने लिया था वह स्वार्थ बुद्धि से नहीं किन्तु हिन्दू जनता की रक्षा के हेतु परमार्थ बुद्धि से लिया था। बाजीराव पेशवा की योग्यता के विषय में भी उन पर उनको कोई सन्देह ना था, अतः उन्होंने तुरन्त बाजीराव पेशवा के प्रश्न का उत्तर दे दिया और कहा मेरे पहले पुत्र हृदयशाह, दूसरे जगतराज और तीसरे आप हैं। आप उनके ही समीप बैठे। बाजीराव राजा छत्रसाल का अर्थ समझ गए और राजा छत्रसाल से राज्य का तीसरा भाग देने की प्रतिज्ञा लेकर बहुत प्रसन्न हुए। इसके पश्चात छत्रसाल महाराज ने स्वयम् उठाकर बाजीराव पेशवा को अपने पुत्र जगत राज के पास मतलब तीसरे नंबर पर बैठाया। हृदयशाह शाह ने और जगत राज ने भी पेशवा को अपना भाई मानकर उनसे पाग(पगड़ी) बदली।

बाजीराव पेशवा थोड़े दिन पन्ना में रहे और महाराजा छत्रसाल की आज्ञा लेकर दक्षिण की ओर चले गए।

महाराज छत्रसाल का परलोक वास विक्रम सम्वत् 1788 जेठ बदी तीन बुधवार 12 मई 1731 ई को हुआ था। छत्रसाल के बहुत पुत्र थे किन्तु सब राज्य के अधिकारी न हुए। महाराजा छत्रसाल की मृत्यु के समय बाजीराव पेशवा भी पन्ना पहुन्च गए थे। छत्रसाल ने बाजीराव पेशवा को राज्य का तीसरा भाग देने का वचन लिया था, अतः शेष दो भाग हृदयशाह व जगतराज को दिए गए।

हृदय शाह को पाना मऊ, गढ़कोटा, कालिन्जर, शाहगंज और उनके आसपास का इलाका मिला। उस समय राज्य की आमदनी 42 लाख रुपए सालाना थी।

जगत राज पुत्र महाराज छत्रसाल के हिस्से में बान्दा, भूरागढ़, जैतपुर, अजयगढ़, चरखारी, बिजावर, और सरीला आए और उस समय राज्य की वार्षिक आय 36 लाख रुपए थे

पेशवा के हिस्से में कालपी हटा, हृदय नगर, जालौन, गुरसराय, झांसी, सिरोन्ज, गुना, गढ़कोटा और सागर आए इसके अलावा छोटी–मोटी जागीर भी दी गई और इस हिस्से की वार्षिक आय उस समय 33 लाख थी

(इंपीरियल गजेटियर में तीनों के हिस्से में क्रमशः 39लाख, 31लाख, 32लाख बताई गई है।)

ओरछे का राज छत्रसाल महाराज के अधिकार में ना था और प्राचीन बुन्देला वन्श के शासक से राज्य निकाल लेना छत्रसाल महाराज ने ठीक ना समझा और ओरछे के शासक के शासन भी कभी छत्रसाल महाराज के मित्र है और कभी मुसलमान से भी मिल जाते थे (दोगलापन)।

हिन्दू राज्य स्थापित करने के, जो आदर्श महाराजा छत्रसाल के समान पुरुषों के थे, उसे भूलकर बुन्देले और मराठे अपने स्वार्थ के लिए लड़ने लगे। मुसलमान की शक्ति बहुत कमजोर होने पर भी वे प्रबल ना हो सके। आपसी झगड़ों का फायदा उठाया– अन्ग्रेजों ने। अन्ग्रेजों ने बुन्देलों और मुगलों से लाभ उठाना शुरू कर दिया। इसी समय सम्वत् 1809 के आस पास में पन्ना में हीरे की खान खोदी जाने लगी थी।

विक्रम सम्वत् 1822 में पहाड़ सिन्ह, महोबा में बीमार हो गए इसी मुश्किल बीमारी में पहाड़ सिन्ह महोबे से कुलपहाड़ आ गए और अपने वन्शजों के भावी युद्ध को बचाने के लिए गुमान सिन्ह और खुमान सिन्ह को समझा दिया और यह उचित भी समझा। गुमान सिन्ह को पहाड़ सिन्ह ने सवा नौ लाख रुपए की आय की रियासत दी, इस भाग में बान्दा और अजयगढ़ के परगना आए। रु1,62,000 के आमदनी वाली रियासत खुमान सिन्ह को दी।

पेशवा के साथ मुसलमान से युद्ध करने के लिए कई सरदार आए थे। इनका उचित पुरस्कार देना पेशवा का कर्तव्य था। पेशवा को इस बार बुन्देलों को सहायता करने के बदले बहुत सा धन और बहुत से इलाके की चौथ मिलने लगी थी, इसलिए पेशवा ने अपने सरदारों को बुन्देलखण्ड के मिले हुए सूबे शासन करने के लिए बान्ट दिया। हृदयशाह ने खदान में काम करने की अनुमति पेशवा को दे दी। हरी विठ्ठल डिन्गणकर को हमीरपुर के कुछ परगने और कृष्णा जी अनन्त ताम्बे को बान्दा और हमीरपुर का शेष भाग तथा जगत राज के राज्य की चौथ वसूल करने का अधिकार दिया।

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

सन्दर्भ

बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास

1 लाला भगवानदीन ने भी इन दोनों के सम्बन्ध में यही बातें लिखी हैं।

2 हिम्मत बहादुर विरदावली– कवि पद्माकर

3 हिम्मत बहादुर विरदावली